भजन

तर्ज :– दीवाने है दीवानों को.

अर्श में रूहों को जगा लीजिये, वो इश्के नजर मेहरबां दीजिये

1.) ये रूहें सभी तेरे तन हैं पिया
तेरे नूर की ही किरण है पिया
कि नूर में ही नूर को समा लीजिये वो इश्के नजर..

2) वो मन्दिर मोहोल,वो झरोखें कहाँ
रूहें लेती हैं बैठ के सुख जहाँ
वो नूर के नजारों का समाँ दीजिये वो इश्के नजर..

3.) करें बात जब एक रूह से पिया
तो बारह हजारों ने सुख ले लिया
अद्वैत के मोहोल में बुला लीजिये वो इश्के नजर..

4.) रसिक राज–श्यामा के आगे सभी
रूहें आये–आये के चरणों लगी
मिले वो ही मिलावा ऐसा कुछ कीजिये वो इश्के–नजर.